

१॥पंच  
१२३॥

॥गीताजानेदर्थायच्या॥१७॥

(1) श्रीसच्चिदानन्दस्त्रेण। विश्वविकासिनीमुद्गा ॥ जयासेडिलुसीयोरानिद्रा॥ तयानमे  
जीगणेंद्रा॥ सहुलुज॥ १॥ त्रिगुणादिपुर्वोवेदिला॥ जिवत्वदुग्मांबिाडिला॥ तोष्वात्मा  
शस्त्रसोडिवेला॥ तुमियास्मृति॥ २॥ कृणोनिशिवेंसांकारालं॥ गुरुत्वेंतुंचिष्वागव्वा॥  
तहंहुलुमायाजव्वा॥ माजितारिता॥ ३॥ जेलुसाविषयीमूढ॥ तयांलागिरुवक्त्रलुंड॥ शा  
नियांसितरिष्वरवंड॥ उज्जूञ्जहास॥ ४॥ दैविकीदिहीयाहातांसानं॥ तन्हंमिळ्वनोन्मीळ  
णी॥ उत्तरतिप्रव्वयदोन्हं॥ लीब्बाविकरिसी॥ ५॥ प्रवत्तिकण्ठचिच्छाल्वं॥ उविलीमदगंधा  
निलं॥ दूजिजेसिनीक्कोस्वलं॥ जीवसंगाचा॥ ६॥ पात्रीनिरतिकर्णताले॥ आहावितेप्  
जाविधुल्वें॥ तेकेलंमिरविसीमोक्कें॥ व्यांगाचेलेणो॥ ७॥ वामांगीचालास्यविलास  
जोहाजगद्गूपष्वभास॥ तोतांडवमिसेंकष्वास॥ दाविसीलुं॥ ८॥ हेंअसोविसमयदातारा  
लुंहोसोजयांचासोयिरा॥ सोयिदिकीचियाव्यवहारा॥ महकेशितो॥ ९॥ फेडितांबंधनाचा  
गव॥ उंजगद्देहुडेसापाव॥ धनंवोवरोउयाव॥ लुसाचिलांगी॥ १०॥ उजयांचेनिनावें



(2)

॥१०॥

॥१॥

३८९

तथा ॥ देह हीनुरे चिपैं देवराया ॥ जेणों तुं आपण पदयां ॥ केला सिंहुजा ॥ ११ ॥ तुतें करु  
 नि पुढे ॥ उरु उपाये घेती दवडे ॥ तयां गसी बहुवें पाडे ॥ मागां चिरु ॥ १२ ॥ जो ध्यानें सहस्रे  
 मानसुं ॥ तयालुगि नाहौं तुस्यो चेदेशं ॥ ध्यानहौं विसरेते णें सं ॥ वालभुजा ॥ १३ ॥ तुतें  
 सिंहुजो नेणे ॥ तो केविनां देसर्वजपणे ॥ वेहां ही येवटें बोलणे ॥ नेघसी चिकाने ॥ १४ ॥  
 मोनगालुसें नाशिनावं ॥ आतां स्त्रो चां बाधों कें हावं ॥ दिससी तेलु लामाव ॥ मांस जों के  
 वि ॥ १५ ॥ दैविकें शेवक हों पाहे ॥ तरिसे दितां द्वाहो चिलहे ॥ मृणा निष्ठातां काहौं चि  
 कोहे ॥ तुजलगि जी ॥ १६ ॥ जैं सर्वयासर्वहो नोहिजा ॥ तें अदय तुतें लाहिजे ॥ हिंजाणे  
 मंवर्मलुसे ॥ आदाध्यलिंगा ॥ १७ ॥ तादु तुरो निवेगले पणा रसंसीमजिनलें लवण ॥  
 तेसेन मनमार्सेजाण ॥ बहुकाय बोलो ॥ १८ ॥ आतां रिताकुमस्समुद्रं रिधे ॥ तो परो  
 निउचं बक्षत निधे ॥ कांदशीदीपनरंगे ॥ दायचिहोये ॥ १९ ॥ तेसालुसयाप्रणितं ॥ मां  
 स्तुष्टुजालाश्च ॥ नवत्ति ॥ आतां आणिन व्यक्ति ॥ गतार्थतो ॥ २० ॥ तरिषो उद्धाध्या

॥१७॥

१९॥

(3)

यदेषां ॥ तियेनम् स्तिचौचांश्लोकं ॥ जोप्रेसानिर्धनिदीक्षां वेविभादे वें ॥२१॥  
 जैहस्त्याहृत्यव्यवस्था ॥ अनुष्ठावयापार्था ॥ शास्त्रवियेकत्तर्वेदा ॥ प्रमाणलुजा ॥२२॥  
 तेष्यें अर्जुनमानसे ॥ मुण्डे हेउसेक्षेत्रं ॥ जेशास्त्रें विष्णनसे ॥ तुटिकाकर्मा ॥२३॥ तरितक्षर  
 काचीफडे ॥ टाकोनिकेतोमणीकाढो ॥ कैनाकिचाकेसुजोडे ॥ सिहांनिया ॥२४॥ मगतेण  
 तोवोविजे ॥ तरीविलेपेंपाविजे ॥ येहवीकायज्ञसिजे ॥ दिति कीर्गं ॥२५॥ तेस्तियादा  
 स्त्रांचीमोक्षी ॥ इयाकोणकैवेटा छ ॥ येवावस्यतेचापब्दं ॥ पैसिजैलकहं ॥२६॥  
 जालयांहं येकबावयता ॥ कालगोवेलभुषितां ॥ कैचापैसानजिविता ॥ येलुलालेया ॥२७॥  
 आणिशास्त्रअर्थदेशकाले ॥ येहैवोहांजेयकफले ॥ तोवियावकिंवामिले ॥ व्याघवे  
 यासि ॥२८॥ मुण्डोनिशास्त्रांचेंघडते ॥ नोहेचिप्रकारेंबहुते ॥ तरिम्भर्वामुमुक्षांयेशं ॥  
 कायगतिपां ॥२९॥ हापुसावयाव्यसिप्रावं ॥ जोषर्जुनकरीलप्रक्तावे ॥ तेस्तत्तदावया  
 ठावो ॥ व्याध्याययेशं ॥३०॥ अर्जुनउवाच ॥ ओ ॥ येशास्त्रविधिमुक्तज्ययजतेश्वद्

(4)

गीताजा०

॥२॥

।३८८।।

यान्विताः ॥ तेषां निष्ठातु काहुङ्क सत्यमाहो न जन्मतः ॥ १ ॥ इवा गति रिसर्ववि  
 षयं वित्तच्छ ॥ जो सकल कर्को प्रविष्ट ॥ किं छाँही न वल हुङ्क ॥ अर्जुन त्वे जो ॥ ३१ ॥ ॥ १७॥  
 ब्रौर्याजो उलाघाधन ॥ जो सो मर्वशाच्चा श्रुंगार ॥ मुखादि उपकार ॥ जयाचिलीका  
 ॥ ३२ ॥ जो प्रदेवा प्रियो त्तम ॥ किं ब्रह्म विद्येचा विआम ॥ सत्यासहचर मनो धर्म ॥ देवाच्चा  
 ज्ञो ॥ ३३ ॥ तो अर्जुन नहुणो गातमाल इगामा ॥ इं प्रियां कावले यां अभ्या ॥ तु ज्ञावो लये क  
 आम्हां ॥ साकांक्ष पैंजो ॥ ३४ ॥ जेवास्त्रं वांचो निभाणिके ॥ प्राणियांसि मोक्षन देरैं ॥  
 उसाकां जो वै पक्षे ॥ बोलिलासा ॥ ३५ ॥ तेन मिले वितो देवा ॥ नो हेवि काळाव काढा ॥ ३६ ॥  
 जो करवी चास्त्रास्यास ॥ तो ही डुरी ॥ ३६ ॥ प्राणिअस्यासि विनजिया ॥ होती जी साम  
 यिया ॥ तियाही नाही अपेतिया ॥ तेण वै कें ॥ ३७ ॥ उजुनो हेवि प्राचिन ॥ नेदी विप्रशा  
 संवाहन ॥ उसां रेले अपादान ॥ शास्त्रां चेजया ॥ ३८ ॥ किं ब्रह्म नाशा स्त्रविषं ॥ ये कही  
 न लाहाता विनस्व ॥ मृणो निउरिव विरवा ॥ सांउलीजिहं ॥ ३९ ॥ परिनिर्दाननिशा

॥२॥

स्त्रेण ॥ अर्थानुशानेण विचित्रेण ॥ नांदततिपवित्रेण ॥ सात्त्वानेंजो ॥ ४८ ॥ तयां उमयाआम्हानो  
 आवें ॥ दुसीचाउबांधोनिजिवें ॥ घेतीतयंचेंमागावें ॥ आचवावया ॥ ४९ ॥ घडेयाचेया  
 अरवनां ॥ तब्बीबाल्लिहीदाताना ॥ कांपुटेंस्तुनिपरिकना ॥ अक्षमचाले ॥ ४१ ॥ तैसेसर्व  
 वास्त्रं ॥ निपुण ॥ तयांचेजेंआचवण ॥ तेंचिकावितीप्रमाण ॥ आपुलियेशहे ॥ ४३ ॥ मग  
 शिवादिकेम्हजुनें ॥ फूम्यादिकेम्हादनें ॥ अग्निहोशादियजनें ॥ करितीजिश्छा ॥ ४४ ॥  
 तरितयांसत्त्वरजतमा ॥ माजिकेआपुरपेतमा ॥ गतिहोयतेआम्हां ॥ सांगिजोजी ॥ ४५ ॥  
 श्रीकागवान्नवन्नच ॥ ० ॥ त्रिविधासंवातैभवति शद्वाहेहनांसा ॥ स्वप्नावजा ॥ सात्त्विकी  
 राजसीचेवतामसीचेतितांश्राणु ॥ २ ॥ टिक० तदंवेकुंघपिरिचेंलिंग ॥ जोनिमंगोपद्मा  
 चेंपनारा ॥ जियेजयाचेनिहेंजग ॥ अंगाढाया ॥ ४६ ॥ काळसवियांचावाड ॥ लोकोत्तर  
 प्रोद ॥ अहितीयगुट ॥ आनंदघन ॥ ४७ ॥ इधयेंस्तुघेजेतियेणेंबिकें ॥ तेंजयचेष्टांगां  
 आसिकें ॥ तोहुछस्त्वमुरें ॥ बोलतअसे ॥ ४८ ॥ महेपार्थालुज्जाष्टतिसो ॥ घेयांगाआ

(६)

॥गीता०

॥१३॥

॥३८॥

स्तुं जापत असो ॥ जेद्वास्त्राभ्यासाच्च आउसो ॥ मनिताति कं ॥ ४८ ॥ उनुधेयावि ॥ अध्या०  
 साटी अद्वा ॥ इबों पाहसी परमपदा ॥ तनितैसेहं ॥ हें प्रबुद्धा ॥ नोहोपेनके ॥ ४९ ॥ अद्वाम् ॥ ॥ १७॥  
 गितलेयाच्चिसाटी ॥ पातिजोंनये किरीटी ॥ कायद्विजञ्चयघट्टी ॥ अंत्यचिनोहे ॥ ५० ॥  
 गंगोदकजन्हौजाले ॥ तहुं मध्यमांडां खालि ॥ तद्योवोंये काहुं केले ॥ किचारियां ॥ ५१ ॥  
 चंदनहोयद्वीतज्ज ॥ परिष्ठागसी पावे मेव ॥ तेहाले ॥ धदिलाजालुं ॥ नसि के काय ॥ ५२ ॥  
 कांकिराच्चियेभाटिते पुरी ॥ परिलेसोले किरीटी ॥ तद्योतलेयां सोक्यासाटी ॥ नगवी  
 ना ॥ ५३ ॥ तेसे प्रदेवेदलवाडे ॥ अतोंकी न चोरवाडे ॥ ५४ ॥ परिष्ठाच्छियां चापडे ॥ विभागीजे  
 ॥ ५५ ॥ तेप्राच्छियेतवैस्वभावे ॥ अनादिमाया प्रभावे ॥ त्रिगुणाच्चेनिभाघ्यवे ॥ विकिलेष्य  
 हाति ॥ ५६ ॥ तेथेहं ॥ दोनिगुणरवांत्वती ॥ मगर्ये कधरी उन्नती ॥ तेतैसायचिहोती दृती ॥  
 जिवांचीययां ॥ ५७ ॥ वत्तिरेसेमनं ॥ धरिती ॥ मनाउसा कियाकरिती ॥ केलयां उसेव  
 दिती ॥ मनोनिदेह ॥ ५८ ॥ बोजमोडले बिजं सामाया ॥ उसेकल्प

॥३॥

कोटि जिये जाये॥ पवित्रता तिन नाम से॥ ५८॥ तथा परीयि यें अपोने॥ होता जाता जन्मा तेरे॥  
 इंगुण लक्ष्मी विचारे॥ प्राणि यांचे॥ ५९॥ महेषोनि प्राणि यांचा पैर्कं॥ पडिला श्रद्धा  
 दलो कं॥ होय गुणा भासि रखी॥ तिहांयांगो॥ ६०॥ विषये बोटे सत्त्व पैर्ण॥ शुद्धा ते कांजाना  
 चीकरी साद॥ परिये कादो देवो रवद॥ ये रखा हात॥ ६१॥ सत्त्वाचे निअंगालगो॥ तथा द्वा  
 मोहर फला रिशे॥ तवं रजत मठुरे॥ कांते नहृते॥ ६२॥ मोडुनि सत्त्वाची चाये॥ रजो गुण  
 वाकादे जाये॥ ते कांते चिश्रद्धा होये॥ कर्मा सुनि॥ ६३॥ मांते मत्त्वी उरी आगी॥ ते कांते  
 चिश्रद्धा पांगी॥ होंलागो भोगा लड़ी॥ भलते या॥ ६४॥ ६४॥ सत्त्वानुकूप सर्वस्य श्रद्धा  
 सवति सानत॥ श्रद्धा मयो यंकुष्ठ पोयो य दुरः॥ ६५॥ सवसः॥ ६५॥ टिका॥ उवं सत्त्व न जतमा॥  
 वेगळी श्रद्धा सुवमरी॥ नाहं॥ गाजी वग्रामा॥ माजिययां॥ ६६॥ महेषोनि श्रद्धा स्वस्तावि  
 क॥ असौ पैंशि गुणात्मक॥ बजत मसाविक॥ कोदी इहं॥ ६७॥ जैसे जीवन चिंउदक॥  
 परिविष्णो होय मादक॥ कांमि नियां माजि तिरव॥ उसंगोड॥ ६८॥ ते साबहु वसंत में

(8)

गीताज्ञा०

॥४॥

३९०॥

जो सदा चिह्नोयनि मे ॥ ते धे श्रद्धा चिपरि ण मे ॥ ते चिह्नोनि ॥ ६८ ॥ मग का जला आणि  
 मसी ॥ न दिसेवि चंचना जैसी ॥ ते सा श्रद्धा तामसी ॥ चिन्हं नाहं ॥ ६९ ॥ ते सीवि नाजती  
 जिवं ॥ न जो मर्याडा एवी ॥ सा चिकं आधवी ॥ सत्वा च चिं ॥ ७० ॥ इसे निहास कल ॥  
 जग उंबर निरवला ॥ श्रद्धे चाचि कैवल्या वो तला असे ॥ ७१ ॥ परिगुणत्रय वद्वा ॥ चिविध  
 उंपणा चेलासं ॥ श्रद्धे जें उठिं असे ॥ ते वो ल्यरवलं ॥ ७२ ॥ तरिजाणि जेटि फुले ॥ कांमान  
 सजाणि जेबोले ॥ जो गें जाणि जो केले ॥ पूर्वज निचे ॥ ७३ ॥ ते सा चिह्नं जिहं चिन्हं ॥  
 श्रद्धे चंकयें तिन्हं ॥ देखि जेति तेवान ॥ अवधारी पां ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥ यजंते सा चिका  
 देवान् यक्षरक्षां सिवाजसाः ॥ प्रेतान् यस्तगाणं श्वान्येय जीते तामसा जनाः ॥ ७५ ॥  
 चिका ॥ तरिसा चिका श्रद्धा ॥ जयांच्वहे य बाधा ॥ तयां बहुत कर्त्तनि मेधा ॥ स्वगं  
 रिका ॥ तरिसा चिका श्रद्धा ॥ जयांच्वहे य बाधा ॥ तयां बहुत कर्त्तनि मेधा ॥ ७६ ॥  
 चिआंशी ॥ ७७ ॥ ते विद्या जात पदती ॥ यज्ञक्रिये निवडती ॥ किं बहुना पउती ॥ देवलो  
 कां ॥ ७८ ॥ आणि श्रद्धा राजसा ॥ घडले जेवी नेशा ॥ ते भजती नाहिसां ॥ रेवरां हान ॥ ७९ ॥

५१

अध्या०

॥११॥

जि८

॥४॥

आणि श्रहाजे कांता मसी ॥ ते भी सांगै न लुजसी ॥ जे कांके वल पापनाइ ॥ निर्द  
 यते ॥ ७८ ॥ जिव वधें साधू निबल्ली ॥ फरतें घेन कुछें मैल्ली ॥ स्मृतानीं संध्याकाळी  
 पुजितीते ॥ ७९ ॥ तेतमो गुणाच्चेसार ॥ काढ निनिमि लेनर ॥ जाणतामसि येघर ॥ श्र  
 हृचेते ॥ ८० ॥ देसं इहं तिहं लिंगं ॥ चिपिधि श्रहाजां ॥ ऐहं हीय याठागी ॥ सांगत असां  
 ॥ ८१ ॥ जेहेसा तिक श्रद्धा ॥ जतन धरावी गध बुद्धा ॥ येरी दोहं विनद्धा ॥ सांडाविया ॥ ८२ ॥  
 हेसा तिकी मतिजया ॥ निर्वाहा तिडो यूधनं जया ॥ बागुलनो हेतया ॥ कैवल्यते ॥ ८३ ॥ तो  
 न पठो कांब्र अस्त्र ॥ नालोटुकां सर्वशस्त्र ॥ मिहांतन कृतस्त्रतंत्र ॥ तयाचाहाती ॥ ८४ ॥  
 परिश्रुति स्मृति चिभर्थी ॥ जे आपण चिहु उनिस्तती ॥ अनुष्ठानें जगदेत ॥ वडिल जेजे  
 ॥ ८५ ॥ तयाच्चाचन ती पाउले ॥ पाहोनिसा चिकाश्रहाच्चाले ॥ तोते चिफक वरेविले ॥  
 देसेलोहा ॥ ८६ ॥ ऐये कदी पलावी सायासे ॥ आणि कतै धेंल उंवैसे ॥ तरितो काय प्र  
 काशे ॥ वंचिजेगा ॥ ८७ ॥ कांये के मोल अपार ॥ वेचूनि बांधले टवला न ॥ तो सुर वाडव

(१०)

॥गीतार्था॥

॥८॥

॥३९॥

स्तिकार॥ नपोगितीकायी॥ ८॥ हें असो ज्ञेतव्यें वनी॥ तें कायतयाचीत शाहनी॥  
 हृषिवब्लंचि अन्धरं॥ ये रानो हे॥ ९॥ हें बहुत बोलों काय पैगं॥ ये कागौत मासीचि  
 गंगा॥ ये रांस मस्तां काय जग॥ वाहु व्यजाली॥ १०॥ मुण्डे निष्ठा पुलालयाजे परी॥  
 शास्त्र अनुस्तुती कुसरी॥ तयां ते श्रद्धाल्लजो वरी॥ तो मूरख ही तरे॥ ११॥ १२॥  
 अशास्त्र विहित घोरं तप्यं ते ये तपो जनोः॥ दैसाहं कारन संकलाः कामचराग बला  
 निताः॥ १३॥ टिका॥ नाशास्त्राचे नवीन कारन वें खांक नोहाँ नेणती जिवें॥ परिशास्त्र का  
 हो शिवो॥ नें द्विती टें कों॥ १४॥ वडिलांचि यानि या॥ देर खेनिदावी वांकु लिया॥ पांडितांकु  
 लिया॥ वाज विही॥ १५॥ आपुल निष्ठा लोपें॥ घन खाचे निदर्पें॥ साच्चि पार खांडाच्चि  
 तोपें॥ आदरिता॥ १६॥ आपुलिया पुढेलांचि या॥ व्यांग घालु निकांति या॥ रंगता  
 मासा धूणति या॥ भनंसन्॥ १७॥ रिच्च वती जव्यतां कुंडी॥ लाविता चेडयांचा तोंडी॥  
 नवसियें देती उंडी॥ बाल्लकीचा॥ १८॥ अग्रहाचि याऊजरिया॥ क्षुर देवतां विकी

॥अध्या०  
॥१७॥

॥१८॥

(11)

यां अनन्त्योगें साथ दिया॥ टकितीये क ॥१७॥ आगा आस पद पीडा॥ बीजत महेज़ी  
 सुहाडा॥ पेरिती मरापैं पुटां तें चिपिके॥१८॥ बाहुना ही बापुलिया॥ आगि नावे तेही॥  
 धनंजया॥ नधरी हो यतया॥ समुद्रं जैसे से॥१९॥ कावे द्यां तें करी जाल्ला॥ न स सांडी पायरवा  
 ल्ला॥ तोरोरी जया विकल्ला॥ वसता होये॥२०॥ नाना पुडिक न चेनि सल्ले॥ काढी आपु  
 ले दुब्बे॥ तें वणवां खां धवां॥ जैसे बाके॥२१॥ तें सेतं यां असुना होये॥ जैं निंदि निवास त्रां  
 चासोदे॥ सैं धां वता तिमोहे॥ अठवां जैकां॥२२॥ कामकर बीतं चिकरिती॥ क्रीघ मारवी  
 तें चिमारिती॥ किं बहुना मातें पुरिती॥ डुख त्वा गुडुगां॥२३॥ छोक॥ कषयं तः शरीर  
 स्तुं फूल ग्राम मचेत सः॥ मां चैवांतः शरीर स्तुता निध्यासु रनि श्वयान्॥२४॥ टिका॥  
 मग आपुला पनावां देहं॥ विनाइकरिती जैजैकाहं॥ तें मज अद्भुत यां तेयाहं॥ त्रीणहो  
 य॥२५॥ पैवां चेनि हियावेलो॥ पापियां तयां नातवावै॥ परिपुडिले न सांघावें॥ त्यजावया  
 ॥२६॥ प्रेत बाहे दिघालिजो॥ कां अंस्य जैसा सकलिजो॥ तें असोहु तें क्षाक्षिजो॥ करम ल्लते॥२७॥



(12)

॥गीताज्ञा० तेयेंबुद्धियाखाडा॥ तोलेपुनमनवेजेसा॥ तयंते सांडावयातेसा॥ अनुवाद  
 हा॥७॥ परिष्वर्जनलुंतयांते॥ देरवसा तैंस्मरहोमाते॥ जेआनप्रायश्चितयेथे॥ मा  
 नेलना॥८॥ महणोनिश्चदा-जेसात्विकी॥ पुढतिपुटतीतेत्वियकी॥ जतनकरावीनि  
 की॥ सर्वांपनी॥९॥ श्लोक ॥ वहारस्वपिसवस्यत्विधोकवत्प्रियः॥ यद्दस्तपक्त  
 थादानीतिषांकेदमिमंश्टप्तु॥१॥ इवा॥ धवावातेन्सासीरा॥ जेएन्सात्विकयोवेलता॥  
 सत्वरुद्धीचामागा॥ अहारघेये॥११०॥ येहुवीतकुंपाहुं॥ स्वफाववृद्धिचावायी॥  
 अहारवांचौनिनाहुं॥ बव्वीहेनु॥११॥ प्रस्यस्पाहेयांविना॥ जोसावधघेमदिना॥ तोहो  
 उनिवकेमाडिना॥ तियेविद्धपाणी॥१२॥ कांजोसवियाअन्नरससेवी॥ तोव्यापिजेवात  
 श्लेष्मस्वभावी॥ कायज्वरजालियांनिववी॥ पयादिक॥१३॥ नात्रिष्वमृतजयापनी॥  
 घेतलयांमनणनिवारी॥ कांआपुलियाएसेकनी॥ सेविलियांविष॥१४॥ तेविजेसा  
 घंपेष्वहार॥ धालुतेन्सात्विहोयथाकाद॥ धालुएसाअंतर॥ मावयोवे॥१५॥ जेसेंकां  
 ॥६॥

उयाचेनितापेण्॥ अंलुउदकहीतापे॥ तैसीधालुवशोंआटोपे॥ चित्तवृत्ति ॥११६॥  
 मृणोनिसाविकनससेविजे॥ तेस्त्वाचीवाटियाविजे॥ नाजसातमसीहोयिजे॥  
 येरिंरसं॥१७॥ तरिसाविककोएष्वहार॥ नाजसातमसाकायआकार॥ हेसांगोकरं  
 आदर॥ अकर्णनी॥१८॥ आणियेकसदभहार॥ कैसेनितिनमोहन॥ जालियातेहं  
 विना॥ रोकडेंदराडं॥१९॥ तरिजेवणानावियाकच्॥ निष्पत्तिकंबोनयांची॥ आणिजोवि  
 तातवंगुणाची॥ दासीयेशें॥२०॥ जेजीवकत्तोसोका॥ तोगुणास्तवस्त्रभावता॥ पावो  
 नियांविधिधता॥ चेलेविधा॥२१॥ मृणोनिविधिष्वहार॥ यज्ञहीकीरविधिप्रकार॥  
 तपदानव्यापार॥ चिधिवित्ते॥२२॥ **अकाः**॥ अकाःस्त्वव्यवदोग्यन्सुरवणातिवर्द्ध  
 नाः॥ नस्यास्त्रिग्धस्त्रिभवहृद्याप्याहाराः साविकप्रियाः॥८॥ टाटिका॥॥ परिष्वहार  
 लहृणपहिलों॥ सांगोजेमृणितले॥ तेष्वायिकगाप्तले॥ नृपकर्ता॥२३॥ तरिस्त्वगुणा  
 कडे॥ जैदेवंसोकापडे॥ तेमधुर्मसीवाढे॥ मेचुतया॥२४॥ आंगोचिदव्येंसुरसे॥

(७५)

॥गात्रा ॥ जे आंगे चिप हार्ध गोड़ि से ॥ आंगे चिन गे ह बहुवसे ॥ सुपके जिये ॥ १२८ ॥ आकर्षे  
 नोहती डगले ॥ स्थां विति निर्बले ॥ जिसे लागि स्नेह ले ॥ स्वादे जिये ॥ १२९ ॥ ससे गाढ़े  
 ॥ ११ ॥ वारि टिले ॥ द्वयमावे जांथि ले ॥ गये रावसा उले ॥ अग्नितोये ॥ १३० ॥ जांगे साने प  
 रिणा में थोर ॥ जे से गुरु मुरिन्दे अहसर ॥ तैसा अल्प ही अपार ॥ तस्मिरहे ॥ १३१ ॥ आणि  
 मुख औ जैसी गोड़े ॥ तैसा चिह्न तै छां लुले कडे ॥ तिही अन्न धाति वाठे ॥ साति कासी ॥ १३२ ॥  
 उदं गुण लक्षण ॥ साति क साज्या जाए ॥ आकष्य चें त्राण ॥ नीचन वे हो ॥ १३३ ॥ येण  
 साति कर से ॥ जबं दहो मे हो बर्बे ॥ तबं धाकष्य नदी उस से ॥ देहाची देहा ॥ १३४ ॥ सत्वा  
 चिये कीरपाक्ति ॥ कारण ह चिस्तु नति ॥ दिवसा चिये उन्नति ॥ भानु जैसा ॥ १३५ ॥ आणि  
 ब्रारी दहान मानसा ॥ बब्बा चौपै सुकै सा ॥ हर अहान तै दं बा ॥ कैंची नोगा ॥ १३६ ॥ हासा  
 चिक होय सोग्य ॥ तै कोगा वया व्यादोग्य ॥ शरीरा सिक्षाग्य ॥ उदै ले जाएं ॥ १३७ ॥ आ  
 पि सुख चिंद्ये एंदिए ॥ निकै उवाया येण ॥ हें असो वाठे साज्ञे ॥ आनंदे सी ॥ १३८ ॥  
 दे सासा ति क अहार ॥ परिणा मला थोर ॥ करी ह उपकार ॥ सबाख्यासी ॥ १३९ ॥ छोक ॥

॥ अथ ॥  
॥ १३९ ॥

॥ ७ ॥

(15)

कदूम्ललवणा दूर्घतीस्पनक्षविद्वाहिनः ॥ अहमनाजसः श्रेष्ठाऽऽुरवशो  
 कक्षयप्रदः ॥१॥ इका ॥ आतानाजसीज्ञाति ॥ जिहंरसंआंशी ॥ कर्त्तव्याहीव्यक्ती ॥  
 प्रसंगोंगा ॥१३७॥ तरिमारेंउपेंकाव्वकुट ॥ तेपेंमानेंजेंकडुवट ॥ कांचुनयांहुनिदा  
 सट ॥ आम्लहान ॥२॥ कणिकेतेंजेसेपाणी ॥ तेसेमिठातेंबाघेयाभाणी ॥ तेलुलाचि  
 मेव्ववणी ॥ रसांतरांची ॥२॥ उसेरवारटब्बपाडुंनाजसातयाजावडे ॥ उन्हाचेनिमि  
 सेतोडे ॥ आगाचिगिळी ॥१४०॥ वाफेचियेसिगे ॥ वातिहीलाविल्यांलागे ॥ तेसेउ  
 न्हमगे ॥ नाजसतो ॥४१॥ वांवंदलेपाडनिघार्ये ॥ नव्वब्बुडाहारलाज्ञाहे ॥ तोउसेतिरव  
 टरवाये ॥ जेंघायेंविणलागे ॥४२॥ अोाणीरास्तहुनिकोरडे ॥ आंतबाहेरियेकेपाडे ॥  
 तोजिकादंवाभावडे ॥ बहुततया ॥४३॥ परस्परेंदांता ॥ आदब्बुहोयनवातां ॥ तोगातों  
 ऊघेतां ॥ तोरवोंलागे ॥४४॥ आधोंचिद्व्येंचुरमुनी ॥ वरिपद्वेंडिजतिमहरं ॥ जियें  
 द्यतांहोयेतसेधुवटी ॥ नाकातोंडा ॥४५॥ हेष्वसोउरोंजागातैं ॥ म्हणतेसेनायिते ॥

(16)

॥गीतज्ञ॥ पदियें प्राणा परोते ॥ माजसा निगा ॥ ४६ ॥ देसा नुपरोनि तीउ ॥ जिक्से केलावेड़ा ॥ अ ॥ अध्या०  
 ॥ ८ ॥ अमिसें कडमडां ॥ आगी चिरवाये ॥ ४७ ॥ तेसा चिलबंदा सुटे ॥ मगमुयो नाडो जेसां ॥ १७ ॥  
 टे ॥ पाणियां चें नसुटे ॥ तोडौ निपाच ॥ ४८ ॥ तेष्याहार नोह तिघेतले ॥ व्याधिव्याकरन्  
 त टूले ॥ तेचेवावयाद्यातले ॥ माजवणापोटा ॥ ४९ ॥ तेसेयेकमेकांसक्षे ॥ रोगउठिता ॥ येकेवे  
 क्षे ॥ देसावाजसाओहार सफक्षे ॥ कैचल्लु धरवे ॥ १५० ॥ इदं राजसाओहारा ॥ क्षपकैछे  
 धनुर्धरा ॥ परिणामत्वाही विसुरा ॥ सांघीतला ॥ १५१ ॥ यातांतयातामसा ॥ आवडेषा  
 हारजैसा ॥ तोही सीधों विक्षसा ॥ इनें तुम्हे ॥ १५२ ॥ श्लोक ॥ यातयामंगतरसीपूतप  
 कीषितं चयत् ॥ उष्ठिष्ठमपि चामेध्यं पराजनं तप्मस्त्रिये ॥ १५० ॥ टिका ॥ तरिकुहि  
 जलें उस्त्रें रवातां ॥ नमनिजेतेणों अनहिता ॥ जेसेकां उपहिता ॥ म्हेसिरवाय ॥ १५१ ॥  
 निफजलें अन्नतेसे ॥ उपाहारं कायेन्नादिवसे ॥ अतिकरें तैतामसे ॥ घेयिजेते ॥ १५२ ॥  
 नातरिअर्ध उकडिले ॥ कांनिपटकर पैनिगले ॥ तेसें चायेचुकले ॥ नसाजें यैवे ॥ १५३ ॥

॥ ८ ॥

४७  
जयाकां छांशी निष्पत्ति ॥ जे धैं दस धरी व्यक्ति ॥ तें अन्न दु सी प्रतीति ॥ तामसा नाहूं ॥  
॥ ४८ ॥ दु से निकाहूं विषये ॥ सद न्नाव दपडा होय ॥ परिघाणि सुटे तवं रहे ॥ व्याप्रजे  
सा ॥ ४९ ॥ दे बोहूं दिवसो बोलां डिले ॥ अरवा धपणे नां डिले ॥ शुष्क अथवा न डिले ॥  
गापिणे हूं हो ॥ ५० ॥ तें हौं बाप्ति चें तरे हूं ॥ खिल उले जे शारा डिकरी ॥ कां सरे बन  
उनिनारी ॥ गातां बिल करी ॥ ५१ ॥ ते से निकाश में जे रखाये ॥ ते तया जे विले दु से होय ॥  
परियेण हूं न धाये ॥ पापियातो ॥ ५२ ॥ मान्य मत्स्य र दे रवा ॥ निषेध चाहो बुखवा ॥  
जयाकां सदोषा ॥ कुद्रव्यांसी ॥ ५३ ॥ तया अपेया चापाना ॥ अरवा धांचा ही को जनी ॥  
वाट विजे उतान्हूं ॥ तामसे ते ठे ॥ ५४ ॥ उलं तामस यै जे कुणारा ॥ दु सी सी में चुयीना ॥  
यया चं फल डुसना ॥ लक्षणी नाहूं ॥ ५५ ॥ जे जे कां चिह्ने अपवित्र ॥ द्विवेतया चं वक्र ॥  
ते कां चिपापापात्रा ॥ जालाकी तो ॥ ५६ ॥ यया ही वौ ते तै जे वा ॥ ते जे चिती बो उनमु  
णावी ॥ पोटकर दिती जाणावी ॥ यातनातो ॥ ५७ ॥ द्विर छेदं काय होय ॥ अली रिघतां के

(18)

॥गीतार्था०

॥९॥

॥३०५॥

सेष्ठाहो हेजाणावै कायपाहे ॥ वरिसाहातचिभसे ॥ ८६ ॥ मुहेतो नितामसाधन्ना ॥  
 परिणामगासिना ॥ नसंगोविभजुना ॥ देवम्हणता ॥ ८७ ॥ अतांय्यावरा ॥ आहाना  
 चियायाचिपदी ॥ यज्ञहो अवधारं ॥ चिधाअसे ॥ ८८ ॥ परितिहोमाजिपथम् ॥ सात्त्विक  
 यज्ञाचेंकर्म ॥ आयिकपांसुमहिम् ॥ दिवोमणां ॥ ८९ ॥ शुलोक ॥ अफला कांशिभि  
 र्यज्ञो विधिदष्टेयद्यते ॥ यष्ट्यमेवतिमनः समाधाय ससा त्विकः ॥ ९० ॥ टिका ॥  
 परियेकचिप्रिया तम् ॥ वांच्चनिवाटोंनेंदीकाम् ॥ डेसाकांमनोधर्म ॥ प्रतिब्रतेचा  
 ॥ ९१ ॥ नानासिंधूतेंटाकहनिगांगा ॥ पुटानानकरीचिनिगा ॥ कांश्रात्मादेरवोनिउ  
 गा ॥ वेदवेला ॥ ९२ ॥ तेसेजेंआपुलेंदिहितों ॥ वेचोनियांचित्तवृत्ति ॥ नुरविताचिभ  
 हैसती ॥ फलालागी ॥ ९३ ॥ यातलेयांझाडाच्चमूल ॥ मागुतेंसमेंनेणेंचिजल ॥ जि  
 रालेंचिकांकेवल ॥ तयाच्चाचिष्यांगां ॥ ९४ ॥ तेसेंदेहेमेंदोहं ॥ यजननिश्चययात्वा  
 गयं ॥ हारपेनिजेंकाहं ॥ वांछिताना ॥ ९५ ॥ तिहोंफला वांछात्यागां ॥ स्वधर्मवां

॥अध्या०  
॥ १७॥

॥१॥

(१९)

चुउनिविदारां ॥ कोजेजोयज्ञसर्वांगं ॥ अलैहृत ॥ १७५ ॥ परिअरिसांआपणोपं ॥  
 डोळांजेसेंद्येपं ॥ कांतबहुत्त्वेनिदीपं ॥ नलपाहिजे ॥ ७६ ॥ नानाउदितेंदिवाकने ॥  
 गमावामार्मदिवीभवें ॥ तैसा वेदनिहनिं ॥ देवोनियां ॥ ७७ ॥ तियेंकुडेंमंडपवेदी ॥  
 आणिकहीसंसारसमद्वी ॥ तेमेलवणजेसाविधी ॥ आपणकेडी ॥ ७८ ॥ सकलाव  
 यद् उचितें ॥ लेणीपातलुंजेसांखारातें ॥ तैसेपदार्थजेश्चितेष्यें ॥ विनियोगुनि ॥ ७९ ॥  
 कायवान्तबहुत्तीबोलां ॥ तैसीसर्वकरणांसनडी ॥ यद्यैज्ञविद्याविनृपाजाली ॥ यजन  
 मिषें ॥ १८ ॥ तैसासांगोपांग ॥ निफजेजोयाग ॥ उठउनियांलाग ॥ महत्वाचा ॥ ८१ ॥ प्र  
 तिपालतरिपाटचा ॥ द्वाढीकीजेलुकसीचा ॥ परिफुलांफळांछयेचा ॥ आश्रयना  
 हं ॥ ८२ ॥ किंबहुनाफच्छाशेविण ॥ एसेनिगुतीयज्ञनिर्माण ॥ होयतोयागजाण ॥ सा  
 त्तिकपेंगा ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ असिसंधायलुफळदेवार्थमपिचैवयत् ॥ इज्यतेसरतश्चे  
 ष्टंतंयज्ञविहिनाजर्ज ॥ ८४ ॥ टिका ॥ आतांयज्ञकामविरेशा ॥ करोययाविदेसा ॥ परिश्र

(20)

गीताना०

॥१०॥

॥३९६॥

हेलागिजैसा ॥ अर्द्धतिलानव ॥ ८४ ॥ जैनंजाजदिवनासिये ॥ तरिक्खुवाउपे  
 गाज्ञाये ॥ आणिकार्त्तिहोहोये ॥ श्रद्धानटके ॥ ८५ ॥ तेसाधनतनिभावांका ॥ मुणेस्व  
 ॥ १७ ॥  
 गजोउलभासिका ॥ दीक्षितहोयीनमान्यलोकां ॥ घोडेलयाग ॥ ८६ ॥ देसीकेवलफला  
 लागी ॥ महत्वाफोकनवयाजतां ॥ पार्थीनव्यातजेयागां ॥ मजसीपेते ॥ ८७ ॥ श्लोक ॥  
 विधिहीनमस्तुषान्नमंत्रहीनमद्विणी ॥ श्रद्धाविवहितीयदीतामसीपरिच्छते ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥  
 आणिपशुपद्यादिविवाही ॥ जोसीकामापदोतानाही ॥ तेसातमसायज्ञापाही ॥  
 आग्रहविमूळ ॥ ८८ ॥ वारयावाटनवाह ॥ मरणसुहृत्तपाहे ॥ कांभिषिद्धासिबिहे ॥  
 आगिजरि ॥ ८९ ॥ तरितामस्त्वयाआवादा ॥ विधिचाभांधिनावेटावावा ॥ मुणौनि  
 तोधनुर्द्वारा ॥ उष्णरवज्ज ॥ ११० ॥ नाहीवेदांचीतेष्ठेंचाड ॥ नयेमत्रादिकतयाकड ॥ अ  
 न्नजातांनसुटेतोंड ॥ मासियेजेवि ॥ १११ ॥ वैनाचावोधक्कामणा ॥ तेष्ठेंकैंरिघैलदद्धि  
 एा ॥ अग्निजाव्यावया उघणा ॥ वरपडाजैसय ॥ ११२ ॥ तेसेवायांविसर्वहोवैच्च ॥ मुख

॥१०॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)